मेघदूत विषयक वक्तव्य: 01

मेघदूत (पूर्व मेघ) 01 से 05 श्लोक अनुवाद सहित

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स प्रथम वर्षीय छात्र-छात्राओं के द्वितीय पत्र की प्रथम अन्विति के लिए। मेघदूत के पूर्व मेघ के 1 से 25 तक श्लोकों का हिंदी अनुवाद विषयक पाठ्य सामग्री)

पाठ्य संकलनकर्त्ता: डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, मारवाड़ी कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

(01)

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत:
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तु:।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

अर्थ:- कोई यक्ष था। वह अपने काम में असावधान हुआ तो यक्षपति ने उसे शाप दिया कि वर्ष-भर पत्नी का भारी विरह सहो। इससे उसकी महिमा ढल गई। उसने रामगिरि के आश्रमों में बस्ती बनाई जहाँ घने छायादार पेड़ थे और जहाँ सीता जी के स्नान द्वारा पवित्र हुए जल-कुंड भरे थे।

(02)

तस्मिन्नद्रो कतिचिदबलाविप्रयुक्त: स कामी
नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्त प्रकोष्ठ:।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श।।

अर्थ:- प्रिया के विरह में कामी यक्ष ने उस पर्वत पर कई मास बिता दिए। उसकी कलाई सुनहले कंगन के खिसक जाने से सूनी दिखाई देने लगी। आषाढ़ मास के पहले दिन पहाड़ की चोटी पर झुके हुए मेघ को उसने देखा तो ऐसा जान पड़ा जैसे दन्त-प्रहार करने में मगन कोई हाथी हो।

(03)

तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो-
रन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे।

अर्थ:- यक्षपति का वह अनुचर कामोत्कंठा जगानेवाले मेघ के सामने किसी तरह ठहरकर, आँसुओं को भीतर ही रोके हुए देर तक सोचता रहा। मेघ को देखकर प्रिय के पास में सुखी जन का चित्त भी और तरह का हो जाता है, कंठालिंगन के लिए भटकते हुए विरही जन का तो कहना ही क्या?

(04)

प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन्प्रवृत्तिम्।
स प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार।।

अर्थ:- जब सावन पास आ गया, तब निज प्रिया के प्राणों को सहारा देने की इच्छा से उसने मेघ द्वारा अपना कुशल-सन्देश भेजना चाहा। फिर, प्रातः खिले कुटज के फूलों का अर्घ्य देकर उसने गदगद हो प्रीति-भरे वचनों से उसका स्वागत किया।

(05)

धूमज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनुषु।।

अर्थ:- धुएँ, पानी, धूप और हवा के समुदाय से उत्पन्न जड़ बादल कहाँ? कहाँ सन्देश की वे बातें जिन्हें कुशल इन्द्रियों वाले प्राणी ही पहुँचा पाते हैं? उत्कंठावश इस पर ध्यान न देते हुए यक्ष ने मेघ से ही याचना की। जो काम के सताए हुए हैं, वे जैसे चेतन के समीप वैसे ही अचेतन के समीप भी, स्वभाव से दीन हो जाते हैं। अर्थात् विरह से तड़पता हुआ व्यक्ति चेतन-अचेतन में भेद का विवेक खो देता है।